काव्य-पुस्तक 'हम विवश है राजतंत्र के' लोकार्पित

पटना, 12 फ़रवरी। बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के तत्त्वावधान मे आज सहाय सदन मे, हिन्दी के वरिष्ठ कवि और मध्य भारत हिन्दी समिति, इंदौर के पूर्वसचिव सुखदेव सिंह 'कश्यप' की काव्य-पुस्तक 'हम विवश है राजतंत्र के' का लोकार्पण सम्मेलन के अध्यक्ष डा अनिल सुलभ ने किया। इस अवसर पर डा मेहता नगेन्द्र सिंह द्वारा संपादित त्रैमासिक-पत्रिका 'हरित वसुंधरा' का भी लोकार्पण किया गया।

अपने लोकार्पण उद्गार मे डा सुलभ ने कहा कि कवि की लोकार्पित पुस्तक देश की दुषित हो रही राजनीति और उसकी विद्रुपता की शिकार देश की जनता की वेदना को अभिव्यक्ति देती है। कवि ने यह बताने की चेष्टा की है कि जबतक देश की राजनीति मे सूचिता नही आती, भारत का लोकतंत्र 'राजतंत्र' की विवशताओं को ही पोषित करता रहेगा। डा सुलभ ने अंग-वस्त्रम पहनाकर श्री कश्यप का अभिनंदन भी किया।

इसके पूर्व अतिथियों का स्वागत करते हुए सम्मेलन के उपाध्यक्ष नृपेन्द्रनाथ गुप्त ने श्री कश्यप का विस्तार्पूर्वक परिचय दिया और बताया कि वे महात्मा गांधी द्वारा 1918 मे स्थापित मध्य भारत हिन्दी समिति के पूर्व सचिव होने के अतिरिक्त कई अन्य साहित्यिक पत्रिकाओं का संपादन एवं स्तंम्भ-लेखन करते रहे हैं।

अपनी साहित्यिक-यात्रा की चर्चा करते हुए श्री कश्यप ने बताया कि वे विगत 25 वर्षों से अपने साहित्य के विषयों मे समाज और राजनीति को महत्त्व के साथ स्थान दिया है। एक साहित्यकार को समाज की चिंता होती है, और समाज में किसी भी प्रकार की वितंडा उसे पीड़ित करता है। राजनीति समाज पर सदैव प्रभावी रहा है। उसकी शुद्धि-असुद्धि का लाभ-नुकसान समाज को उठाना होता है। समाज की बेहतरी के लिए राजनीति मे सूचिता नितांत आवश्यक है। श्री कश्यप ने अपनी कविताओं का भी पाठ किया।

इस अवसर पर कवि की विदुषी पत्नी प्रो सुशीला कश्यप, पुत्री डा रचना, सम्मेलन के उपाध्यक्ष पं शिवदत्त मिश्र, डा मेहता नगेन्द्र सिंह, कवि रमेश कवँल, डा वासुकी नाथ झा, शायर आर पी घायल, डा उपेन्द्र प्रसाद राय, कवयित्री सुशीला झा, डा कल्याणी कुसुम सिंह, रेखा सिन्हा, डा भगवान सिंह भास्कर, कवि योगेन्द्र प्रसाद मिश्र, डा आर प्रवेश, कवि भागवत शरण झा 'अनिमेश', रामनंदन पासवान, रघुवंश प्रसाद वर्मा, हरिशंकर प्रसाद, डा सुखित वर्मा, अवध विहारी जिज्ञासु, प्रवीर पंकज तथा विश्वमोहन चौधरी संत समेत बड़ी संख्या मे प्रबुद्धजन उपस्थित थे। धन्यवाद ज्ञापन आचार्य आनंद किशोर शास्त्री ने किया।

(नृपेन्द्र नाथ गुप्त)